

चीन को झाटका

बीजिंग में अगले साल शीतकालीन ओलंपिक होना है, लेकिन अमेरिका ने इसके राजनयिक बहिष्कार की घोषणा की। इसके तुरंत बाद ऑस्ट्रेलिया, ब्रिटेन, कनाडा और न्यूजीलैंड ने भी इसका बहिष्कार कर दिया। इन बहिष्कारों से बाहरलाएँ चीन ने पश्चिमी देशों को चेतावनी दी कि वे इस बहिष्कार की कीमत चुकाएंगे। चीन के विदेश मंत्रालय ने कहा है कि अमेरिका का यह फैसला केवल एक साजिश है जो नामकर होगा। हालांकि चीन से सीमा विवाद को लेकर तनाव के बावजूद भारत ने इस तरह की कोई घोषणा नहीं की है। चीन अगले साल फरवरी से मार्च तक बीजिंग में शीतकालीन ओलंपिक और पैरालंपिक खेलों का आयोजन कर रहा है। चीनी अधिकारियों ने बताया कि उन्होंने किसी भी अमेरिकी अधिकारी को उड्डान में शामिल होने के लिए आमंत्रित नहीं किया था। आमंत्री पर राजनयिक बहिष्कार वह होता है जिसमें सरकार की तरफ से आधिकारिक तौर पर कोई राजनयिक बड़ी अंतर्राष्ट्रीय सभाओं और प्रमुख शिखर सम्मेलनों में या इस तरह के बड़े आयोजनों में शामिल नहीं होते हैं। शीतकालीन ओलंपिक के राजनयिक बहिष्कार का अर्थ है कि बीजिंग में शीतकालीन ओलंपिक में अमेरिका, ब्रिटेन, न्यूजीलैंड और कनाडा के कोई अधिकारी बायूजूद नहीं रहेंगे। यह खेलों का पूरी तरह बहिष्कार नहीं है, क्योंकि अधिकारियों के नहीं रहने के बावजूद खिलाड़ियों का खेल प्रभावित नहीं होगा, जितना कि एक अथलीट के बहिष्कार करने से होता। हालांकि, बहिष्कार करने वाले किसी भी देश ने यह नहीं कहा है कि उनके एथलीट इन खेलों में शामिल नहीं होंगे, जिसका मतलब है कि खेलों के प्रभावित होने की संभावना नहीं है। फिर भी यूरोपीय देशों का बहिष्कार चीन के लिए एक बड़ा झटका माना जा रहा है। इससे पहले छह अंतर्राष्ट्रीय खेलों ने बहिष्कार और कम देशों की भागीदारी छोली है। 1956 (मेलबर्न), 1964 (टोक्यो), 1976 (मॉन्ट्रियल), 1980 (मॉस्को), 1984 (लॉस एंजिल्स) और 1988 (सियोल) में युद्ध, आक्रमण और रांगभेद जैसे कारणों से विभिन्न देशों ने ओलंपिक खेलों का बहिष्कार किया। चीन के साथ भारत का पिछले एक साल से ज्यादा वर्क से सरहद पर तनाव है और दोनों देशों के सैनिक आमने-समने हैं। दोनों देशों के सैनिकों में हिंसक झड़प भी हो चुकी है और सैनिकों की मौत भी है। ऐसे में माना यह जा रहा था कि भारत भी अमेरिका और अन्य यूरोपीय देशों की तरह ही चीन को लेकर कुछ इसी तरह का दम उठाकर आधिकार के खिलाफ चीन को सख्त संदेश देगा। लेकिन इस सब से इतर भारत-चीन तनावपूर्ण संबंधों के बीच 2022 में बीजिंग में होने वाले शीतकालीन ओलंपिक और पैरा ओलंपिक में भारत ने समर्थन किया है। भारत की तरफ से विंटर ओलंपिक में चीन की मेजबानी का समर्थन किया है। रूस के विदेश मंत्री सर्गेई लिवरोफ और चीन के विदेश मंत्री वांग यी के साथ वर्चुअल बैठक में भारत के विदेश मंत्री एस जयशंकर ने अंतर्राष्ट्रीय और पैरालंपिक खेलों के आयोजन में चीन का समर्थन किया है। इसको लेकर चीन काफी गदगद है। लेकिन यूरोपीय देशों ने उसकी जिस तरह से छीछलेदर की है, उसे वह पचा नहीं पा रहा है।

पृष्ठ पात्र ग
सोनम लववंशी
भारतीय मीडिया या यूं कहे टीवी प्रकारिता के दौर में जनसकार के विषय नदराद ही दिखते हैं। लेकिन बीते दिनों एक ऐसा मामला निकलकर सुर्खियों में आया। जो अपना एक व्यापक सरकार रखता है। जी हां कहने को तो भारतीय संविधान में समानता और स्वतंत्रता की लंबी-चौड़ी बातें लिखी हुई हैं। फिर भी आजादी के एक लंबे काल खंड के बाद ये सभी बातें कई स्तरों पर सिर्फ़ किताबी ही मालूम पड़ती हैं। संविधान का अनुच्छेद- 15 लिंग, जाति, धर्म आदि अधारों पर भेदभाव के उम्मूल्य को बात करता है, लेकिन जब वास्तविकता के तराह पर इन बाँकों को तौलता है फिर सभी बातें भौथिरी ही मालूम पड़ती हैं। भौतिकता हो कि भारतीय समाज में कई रस्त पर महिलाएं समानता के अधिकार से विचरित हैं और इसे स्वीकार करने में नीति-निर्माताओं से लेकर पितॄसत्सामक समाज को संकोच नहीं करना चाहिए। वहीं ये बात भी सर्वविदित है कि युजरात कई मायनों में देश के अन्य राज्यों से भिन्न है और इसे टीवी की प्रकारिता ने जमकर प्रचारित और प्रसिद्ध भी किया है। लेकिन जिन उसी युजरात का कों तो वहां की दो महिलाओं की खरबें दिखाए गईं सुर्खियां बनी जो अपने अधिकारों के लिए नायिक लड़ाई लड़ रही हैं। बता दें कि यह कहानी है अहमदाबाद शहर से लगभग 52 किलोमीटर दूर की। जहां एक गांव में दो महिलाएं रहती हैं। वैसे ये महिलाएं पारपारक रूप से अनपढ़ हैं, लेकिन धोखे से खोई हुई जमीन का मालिकाना हक वापस पाकर के लिए जी-तोड़ मेहनत कर रही हैं। अब आप कहें कि दो महिलाओं के अधिकार से विचरित होने से क्या होता? तो जानकारी के लिए बता दें कि ये सिर्फ़ उदाहण मात्र हैं, बल्कि देश के विभिन्न हिस्सों में महिलाओं की लगभग एक सी स्थिति है।

ग्रामीण परिवेश में रहने वाले व्यक्ति भौतिकता परिचित होंगे कि कैसे भौति होते ही महिलाएं भी पुरुषों की भाँति खेतों में काम करने के लिए निकल पड़ती हैं। लेकिन क्या उन्हें भूमि सभ्यता में काष्ठक का दर्जा आजतक मिल पाया है? नहीं। न कि ऐसे में महिलाओं की दशा समाज में कैसे बढ़ती हो पाएँ? वहीं कवि में महिलाओं की भूमिका का विषय कोई नया नहीं है। कवि में महिलाओं की भाँति समाजकार ने 1996 में भवतिश्वर में केंद्रीय कवितापर

फिर यह दुर्भाग्यपूर्ण नहीं तो क्या है। ऐसी स्थिति में सिर्फ इतना ही कहते बनता है कि आखिर इन मामलों में कहा गया सर्विधान और कहाँ गई उसमें लिखी बातें? आज के समय में असमनता की खँडी यानि एक तरफ सरकार बनता है। जो हाँ वर्तमान दौर में ऐसा कोई क्षेत्र नहीं रहता जहाँ असमनता की बेल न पैली हो। कहने को तो हम वैसे कृषि प्रशान देश की श्रेणी में आते हैं। लेकिन जब बात हमारे देश की आधी आवादी के प्रतिनिधित्व करने वाली महिलाओं की आती है। फिर उन्हें कृषि के क्षेत्र में भी कोई खास पहचान नहीं मिल पाती है। आज भी हमारे देश में कृषि के क्षेत्र में पुरुषों का ही चर्चत है। ये सच है कि कृषि के कार्यक्षेत्र में महिलाओं का प्रमाणन बढ़ा है। लेकिन कृषि के क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका नापाय ही मानी जाती है और उनके पास मालिकाना हो। ये बात तो जैसे पिस्तुसात से जुड़े लोग पचा ही नहीं सकते। बात आर्थिक सर्वेक्षण 2017-2018 की करें। फिर इसके आंकड़े काफी चौकाने वाले हैं। इसके मुताबिक कृषि क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी बढ़ रही है तो वही बात जब मालिकाना की की आती है। फिर स्थिति वितरणक हो जाती है। वैसे कितनी अंजीब विडंडन है कि एक तरफ हमारे देश में महिलाओं को मालकी के रूप में पूजे जाने की प्रथा है। लेकिन जब बात घर की लक्ष्मी का दर्जा देने की आती है तो पिस्तुसातक सोच आवी हो जाती है। वर्तमान दौर में भले महिलाओं के साथ समानता का ढिलारी पीटा जा रहा है लेकिन जब बात अधिकारों की अपेक्षा की आती है तो सब मौन धारण कर लेते हैं। चौकाने वाली बात तो यह है कि महिला सशक्तिकरण पर होने वाले खुच में सरकार ने छछ गुना तक कि कमी कर दी है। अब इस पर सरकार की क्या मंशा है यह समझ से पेरे है? लेकिन बात वही है



महिला संस्थान की स्थापना कर दी थी। कृषि मंत्रालय हर साल 15 अक्टूबर को महिला किसान दिवस के रूप में मनाता है। लेकिन मजाल है कि कभी किसी ऐलो में देश का कोई नेता या किसानों का नेता ही किसान 'भाईयों' के साथ 'बहनों' का जिक्र कर दें। महिलाएं पुरुषों के साथ कधे से कंधं मिलाकर चलती तो है। लेकिन जब बात किसानों की होती है तो पुरुषों की ही छवि दिमाग में आती है। यहां तक कि हमारे नेता तक जब किसान सम्मेलन को संबोधित करते हैं तो जिन किसान भाईयों का ही करते हैं रेडियो, टेलीकान पर भी किसान से सम्बोधित ही कोई कार्यक्रम दिखाया जाता है तो उसमें पुरुषों के ही विज्ञानों का प्रकाशन होता है। हमारे देश में किसानों के नाम पर लक्ष्य अंदेलन चलाया जाता है। लेकिन महिला

किसानों का ना ही राजनीति में प्रतिनिधित्व नज़र आता है और न ही कृषि अर्थव्यवस्था में।

दी। इसके अलावा बात जुरजत की ही करें तो वहां गैर कृषक द्वारा कृषि भूमि नहीं खरीदने का प्रावधन है। गीताबेन की तरह ही मीना पटेल भी विधवा तीन बच्चों की मां है। अपने पति की मृत्यु के बाद मीना पटेल को घर से बेदखल कर दिया गया। मीना ने अपनी ही जमीन को अपने पति के भाई से कीमत देकर खरीदा। मीनाबेन के सम्मुख वालों ने उसके हक्क की जमीन को भी गिरवी रख दिया। ऐसे में यह किसी एक महिला की कहानी नहीं है, अपितु ऐसी हजारों महिलाएं हैं जो अपने हक्क की लडाई पूँछ देश में लड़ रही हैं और वह कोट कच्छरी के चक्रवर्काटन को मजबूर है। वहीं दूसरी तरफ हारों देश में कृषि का मालिकाना हक् पुरुषों के साप है। अब बात जनगणना के आंकड़ों के अनुसार करें तो कृषि क्षेत्र में काम करने वालों में महिलाओं की संख्यादौरी भले एक तिहाई है लेकिन उनके नाम पर मात्र 13 फीसदी ही जमीन है। ध्यान रहें कि देश में 80 प्रतिशत से ज्यादा आवादी हिंदुओं की है। 2005 में हिंदू उत्तराधिकारी अधिनियम में सशोधन किया गया। महिलाओं को पुरुषों के बावजूद अधिकार दिए गए और इस बात अधिकार जमीन-जायदाद में भी दिए गए। लेकिन तमाम कानूनों के बावजूद सामाजिक प्रथाओं और परंपराओं को वजह से आज भी भारत में महिलाओं को वो अधिकार नहीं मिल पा रहे हैं। जो उन्हें मिलना चाहिए।

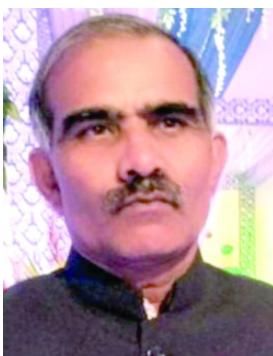
देश के शीर्ष रक्षक बिपिन रावत का जाना !

- | સ્ટૂડોફ નિર્દિશ - 5920 ફિલે | | | | | | | | |
|-----------------------------|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 4 | 2 | 5 | 8 | 6 | 1 | 9 | 7 | 3 |
| 7 | 3 | 1 | 9 | 4 | 2 | 8 | 5 | 6 |
| 6 | 9 | 8 | 7 | 3 | 5 | 4 | 2 | 1 |
| 1 | 6 | 2 | 3 | 8 | 9 | 5 | 4 | 7 |
| 9 | 4 | 3 | 5 | 1 | 7 | 6 | 8 | 2 |
| 8 | 5 | 7 | 4 | 2 | 6 | 3 | 1 | 9 |
| 2 | 1 | 9 | 6 | 5 | 8 | 7 | 3 | 4 |
| 5 | 7 | 4 | 1 | 9 | 3 | 2 | 6 | 8 |
| 3 | 8 | 6 | 2 | 7 | 1 | 4 | 9 | 5 |

डॉ श्रीगोपाल नारसन एडवोकेट
भारतीय सैन्य प्रमुख जनरल बिंदु
बवत का तमिलनाडु के कुच्चर
सिवायंगाम ज़िले में दिल्ली के दो

लिलिकोप्टर हादस में निधन होन के समय उनकी पत्नी मधुलिका समेत 12 और बचपनीयों ने अपनी जान गंवा दी है। रक्षा मंडल ने जनाथ सिंह को लोकसभा में हादसे के बावजूद आज भी उनकारी देते हुए सीडीएस और हादसे के बावजूद आज भी लोकसभा में जान गंवा वाले ने भी हादसे में जान गंवा वाली लोगों को श्रद्धांजलि दी। राजस्वलय की विपक्ष के नेता मलिकार्जुन खड़गे ने इसके बाद लोकसभा अध्यक्ष अनिल कर्मन ने भी हादसे में जान गंवा वाली लोगों को श्रद्धांजलि दी। राजस्वलय की विपक्ष के नेता मलिकार्जुन खड़गे ने इसके बाद लोकसभा अध्यक्ष अनिल कर्मन ने भी हादसे में जान गंवा वाली लोगों को श्रद्धांजलि दी। जो हेलिकोप्टर हादसा हुआ, जो विपक्षी नेताओं की मांग थी और सरकार की ओर से बयान जरी किया गया था। श्रद्धांजलि देने का समाज की नीति करने के लिए सरकार और स्पीकर ने ऐसी व्यापक विपक्षीय विवादों के बावजूद एक समझौते के लिए आयोग की घोषणा की थी। उसको श्रद्धांजलि आयोग के लिए एक सबको समय नहीं मिल गया था। जनरल विपिन रावत को अनिंग्टन में डिफेंस सर्विस स्टाफ को लाना था। एयरफोर्स के एमआई लिलिकोप्टर ने सुलूर एयरबेस से दिन 1.48 पर उड़ान भरी थी, इसे वेलिंग्टन

12-15 बजे टैंड करना था।
लेकिन एयर ट्रैफिक कंट्रोल
लेलिकोप्टर से करीब 12.08 बजे सं-
तुष्ट दिया इसके बाद कुछ स्थानीय ले-
जांगल में आग की लपटें उड़ती देखी
जा रही हैं। इनकर हेलिकोप्टर के पास पहुंचे। इस
बाद रेस्क्यू टीम सभी को क्रैशसाइट



हेलिकॉप्टर में सवार 14 लोगों में से 13 की मौत हो गई है, जिनमें सीडीएस विपिन रवात, उनकी पत्नी मधुलिका रावत और उनके सैन्य सलाहकार लिंगिड्युर लिडर स्टाफ ऑफिसर लेफिटेनेट कर्नल सुरक्षातालों के जवान थे। युप्रै कैप्टन वरण सिंह फिलहाल लाइफ सोर्ट पर हैं। उनका वैलिंग्टन में इलाज चल रहा है। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा, इस घटना की जांच के आदेश दे रिए गए हैं। उद्धरण्टा के बाद घटना स्थल पर पहुंचे वारिस फायरमैन और बचावकर्मी एनसीआर मुरली ने बताया कि हमने दो लोगों को जिंदा बचाया। इनमें से एक निकाला रावत थे। मुरली ने बताया कि जैसे ही हमने उहाँ बाहर निकाला, उहाँने रक्षण कर्मियों से हिंदो में थीम स्वर में बात की और अपना नाम बोला। लेकिन अस्पताल ले जाते समय उनकी मौत हो गई। मुरली ने बताया कि जबलन रावत के शरीर के लिए दो टेपें बंधी थीं—एक लाल और एक गुलाबी।

उहें चादर में लपेट कर एम्बुलेंस में ले जाया गया था। जहां रास्ते में उनकी दुःखद मृत्यु हो गई। देश के चौपंथ ऑफ डिफेंस स्टाफ विभिन्न रावत इनदियों थिएटर कमांड पर काम कर रहे थे। जिसका उद्द्यय तीनों सेनाओं को एक छाँट के नीचे लाना है, ताकि युद्ध की स्थिति में तीनों सेनाओं के सम्बन्धों का सही इस्तेमाल हो सके। लोकिन उससे पहले ही जनरल विभिन्न रावत को क्रूर काल ने हमसे छीन लिया। 31 दिसंबर, 2019 को थल सेनान्यकाप पर से सेवानिवृत्त होने के बाद जब उहें नाया पर सूचित कर देखा कि पहला चौपंथ ऑफ डिफेंस स्टाफ बनाया तो उनका सबसे पहला काम तीनों सेनाओं में तालमेल बिठाकर तीन साल के भीतर सेनाओं का पुर्णांगन कर %थिएटर कमांडों के रूप में भारतीय सैन्य शक्ति को विकसित करना था थिएटर कमांड का अभियान यही है कि भविष्य की सुरक्षा चूनीतियों से निपटने के तीनों सेनाओं की शक्ति एक जुटी होगी प्रोजेक्ट चान और पाकिस्तान से होने वाले खतरों से निपटने में अहम रोल अद्वा करेगा। ऐसा माना जा रहा है। सन 1999 में भारत ने पाकिस्तान के साथ कारगिल की लड़ाई लड़ी थी। इसके बाद बनी कई सैन्य विषयक समितियों ने थिएटर कमांड और चौपंथ

ऑफ डिफेंस स्टाफ के पद स्थापना के सुझाव दिए थे। तभी तो 15 अगस्त 2019 को केंद्र सरकार ने चौथे ऑफ डिफेंस पद की स्थापना की घोषणा की थी और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा था, तीनों सेनाओं में समन्वय तो है और वे अपने-अपने तरीके से आयुर्विकारण के लिए

पुलिस कमिश्नर प्रणाली से कानून व्यवस्था में जगी नई आस

पर्वीणा कक्ष

कई दशक के इंतजार के बाद अंतम: मध्यप्रदेश में पुलिस कमिशनर प्रणाली अमल में आ गई है। इंदौर में 2003 बैच के आईपीएस अधिकारी श्री हरिनारायण चारी मिश्रा और भोपाल में 1997 बैच के आईपीएस अधिकारी श्री मकरंद देउस्कर को पुलिस कमिशनर बनाए गए हैं। दोनों ही अधिकारियों की जनना और प्रशासन में बेदाम छवि है। प्रदेश उन्हें आशा भरी निगाहों से देख रहा है। प्रदेश के इन दोनों महत्वपूर्ण शहरों में कमिशनर प्रणाली की सफलता प्रदेश में भविष्य में कमिशनर प्रणाली के विस्तार और लाभ की एक सरकार इस बात का प्रयास करती रही है कि महिला अत्याचारों में कभी लाई जाए। महिला अत्याचार के बहुत से मामले बड़े शहरों से ही आते हैं। ऐसे में पुलिस कमिशनर प्रणाली यदि महिला अत्याचार को कम करने में सफल होती है तो यह इसकी बहुत बड़ी कामयाबी होगी। दिल्ली, मुंबई और इंदौर शहर दोनों जैसे देश के बड़े शहर पहली से ही पुलिस कमिशनर प्रणाली के तहत काम कर रहे हैं। शहरों की पुलिस कमिशनर प्रणाली का अनुभव भी मध्यप्रदेश के दोनों प्रमुख शहरों के लिए महत्वपूर्ण नजीर की तरह काम करेगा। इंदौर शहर मध्य प्रदेश का सबसे बड़ा शहर है और सबसे

पुलिस सेवा में अपने लंबे अनुभव के आधार पर मैं यह जनता हूँ कि ऐसे बहुत से कानून व्यवस्था के मामले आते हैं, जब जनहित में बहुत तेजी से फैसला लेने की जरूरत पड़ती है। तेजी से फैसला न ले पाने की स्थिति में कई बार वैसी घटनाएं घट जाती हैं जो न खंटें तो अच्छा हों। ऐसे में पुलिस कमिशनर के पास अतिरिक्त अधिकार आ जाएंगे जो अब तक पुलिस कान या डीआईजी के पास नहीं हुआ करते थे।

प्रदेश की साख महिला

प्रमुख व्यापारिक कद्र भा हा यहाँ के व्यस्त बाजार, चौड़ी सड़कें और खुशमिजाज लोग निश्चित तौर पर नई प्रणाली को अपना पूरा सहयोग देंगे। भोपाल शहर का एक हिस्सा तो बहुत पुराना है, जिसे हम स्टीटी कहते हैं। इसके अलावा दूसरा बड़ा हिस्सा मर्तियां, विधायकों, प्रशासनिक अधिकारियों और सरकारी कर्मचारियों से मिलकर बना है। यहाँ पर भी शाति व्यवस्था एक बहुत बड़ा मुद्दा रहती है। शहर का तीसरा हिस्सा कोलार रोड, इंदौर रोड, होशगांवाद रोड के रूप में नए उपनगर के तौर

